3 अहार क्षेत्र के शिलालेख, डॉ. कस्तूरचंद जैन 'सुमन'

4 श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र नावई नवागढ़ नंदपुर- डॉ. काशीप्रसाद त्रिपाठी

5. नवागढ़ (नंदपुर) इतिहास, हरिविष्णु अवस्थी

6. 1 प्राचीन जैनतीर्थ नन्दपुर शिलालेखों के दर्पण में, हरिविष्णु अवस्थी

2 श्री दिग. जैन अतिशय क्षेत्र नावई, नवागढ़, नंदपुर-डॉ. काशीप्रसाद त्रिपाठी

7. 1 जैन कलातीर्थ देवगढ़-प्रो. मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी, डॉ. शान्तिस्वरूप सिन्हा

2. देवगढ़ की जैन कला एक सांस्कृतिक अध्ययन, प्रो. भागचन्द्र जैन 'भागेन्दु'

8. नवागढ़ (नंदपुर) इतिहास, हरिविष्णु अवस्थी

9. संतों की पुरातन साधना स्थली, नवागढ़, प्रो. भागचन्द्र जैन 'भागेन्दु'

10. तीर्थंकर महावीर एवं उनकी आचार्य परज़्परा भाग 2, डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री

11. 1 श्री दिग. जैन अतिशय क्षेत्र नावई, नवागढ़, नंदपुर- डॉ. काशीप्रसाद त्रिपाठी

2 श्री अखिल भा. दिग. जैन गोलापूर्व डायरेज़्टरी, पं. मोहनलाल काव्यतीर्थ

3 नवागढ़- एक महज़्वपूर्ण मध्यकालीन जैन तीर्थ, नीरज जैन सतना

12. 1 नवागढ़ (नंदपुर) का इतिहास, हरिविष्णु अवस्थी

2 संतों की पुरातन साधना स्थली, प्रो. भागचन्द्र जैन 'भागेन्दु'

नवागढ़ के बीहड़ में शैलाश्रय और प्रागैतिहासिक शैलचित्र

- डॉ. स्नेहरानी जैन

सागर टीकमगढ़ मार्ग पर अवस्थित बड़ागाँव के समीप नावई ग्राम के दक्षिणोज़र में लावाजन्य बीहड़ जंगल में बोल्डरों के मध्य ऊँचाई पर कुछ गुफाएँ, शैलाश्रय, बावड़ियाँ टीले खोजने की जानकारी ब्र. जयकुमार 'निशांत' भैया ने दी। एक छोटे शैलाश्रय में कुछ शैलचित्र होने की बात कही, कुछ चित्र भी दिखलाए जिनका अवलोकन करना मुझे अति आवश्यक लगा कारण था छोटा सा शैलाश्रय और उसमें अंकित लाल रंग से बने कुछ संकेत जो काल से वहाँ पर हैं, जो पानी से धुलते नहीं ना ही रगड़ने पर मिटते हैं। उल्टा गीला होने पर दिखने में और भी स्पष्ट हो जाते हैं। उनका सर्वेक्षण करना मुझे अति आवश्यक लगा ज़्योंकि उनके लक्षण मुझे भीमबैठिका शैलाश्रयों का स्मरण करा गए ।

बिना कोई देरी किए भोजनोपरांत हम सागर सें एक कार लेकर दिन रहते नवागढ़ दिगंबर जैन मंदिर परिसर में पहुँच गए और चार पाँच मोटर बाईकों पर लगभग दस ग्यारह व्यक्ति सरपंच श्री रामनारायण यादव को साथ लेकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ गए। किसी काल में लाखों वर्ष पूर्व यहाँ छोटे-छोटे ज्वालामुखी बुदबुदाकर लावा के छींटे फेकते रहे हैं जिनसे सतह पर यहाँ वहाँ बोल्डरों का जमाव दीखता है।

ग्राम नावई की जनसंज़्या लगभग पन्द्रह सौ के आसपास होगी। सुनते हैं कि पिछ्ली सदी के मध्य पंडित गुलाबचंद जी'पुष्प' को एक टीले पर खड़े इमली के एक विशाल के नीचे जिन बिंबों केकुछ खंडित अवशेष पड़े दिखे जहाँ एक भक्त नारियल हाथ में रखें मनौती माँग रहा था । पूछने पर उन्हें जानकारी मिली कि उस स्थान की धूल भी मनोकामना पूर्ति हेतु सातिशयी है। 'पुष्प' जी ने किसी तरह उस इमली के पेड़ को हटवा कर वहाँ खुदाई करवाई तो आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। खंडित जिन बिंबों के अंबार के हटाए जाने धरती से दस फीट नीचे फर्शियों को जोड़कर बनाया एक बड़ा प्रस्तर फलक दिखा जिस पर बीच में कमल और चारों कोनों पर कीर्तिमुख बने हैं। उन प्रस्तर के हटाए जाने पर अरहनाथ भगवान की अति सुंदर खड़्गासित कायोत्सर्गी सातिशयी प्रतिमा मिली जो उसी स्थान पर जमीन में दस फीट नीच भौंयरे

में ही प्राचीन दीवारों के ऊपर सुंदर मंदिर का निर्माण कर विराज दी गई है। प्राचीन विशाल जिन मंदिर के खंडित अवशेषों और खडिंत जिनबिंबों को देखकर सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि अब से लगभग 900 वर्ष पूर्व तक नावई एक बड़ी वसाहट वाला क्षेत्र था, जहाँ राजा जिनधर्मी तो था ही बाशिंदों में भी अनेक संपन्न श्रावक थे, श्रमजीवी किसान थे, गौपालक थे और निष्ठावान क्षत्रिय थे। कहा नहीं जा सकता कि भीषण ध्वंस किसके द्वारा ढाया गया जिसमें मंदिरों को लक्ष्य बनाया गया। फिर भी मात्र अरहनाथ और कुछेक जिनबिंबों को बचाने में पुण्यशाली भक्त सफल हुए। उनकी कोठरी की छत पर भारी शिलाऐं खंडित जिनबिंबों के अंबार का ढेर छोड़कर या तो जैन पलायन कर गए या फिर मर गए। इस प्रकार उस वैभव का अस्तित्व ही सो गया। वहाँ एक भी घर जैनों का नहीं रहा। ग्राम नावई से लगभग 3 किलोमीटर पर बड़े-बड़े बोल्डरों से बना एक शैलाश्रय है जिसमें आदिम शैलांकन है। उन्हीं का वर्णन यहाँ प्रस्तुत है। अ और ब शैलाश्रय की छत बनाती चट्टान हैं जो पूर्वी सिरे पर चेहरे के बंद होठों की सी छवि बनाती है।

अ और एक ही विशाल बोल्डर के हिस्से हैं जिनमें ब दीवार रहकर अ उस पर छत बनाते हुए ढाँकता है। स एक अलग बोल्डर है जिसकी चिकनाहट और चमक दर्शाते हैं कि उस पर लंबे काल से कोई बैठता लेटता आता रहा है। स एक शायिका है जिस पर एक व्यक्ति ही सो सकता है। शैलाश्रय बड़ा नहीं किंतु उसमें बने अवशेष अति विशेष हैं। कुछ अंकन खुदा हुआ सा तो है किंतु धूमिल होने से वहाँ आश्रय लेने वालों ने सफेद और लाल नैसर्गिक का उपयोग करके जो भी अंकन छोड़ा है वह उसे अति प्राचीन काल का होना संकेत करता है। शैलाश्रय के सामने की शिला पर पसरे बोल्डरों पर बैठने, लेटने हेतु काफी स्थान है जिस पर खुले आसमान के नीचे एक छोटा जनसमूह समा सकता होगा।

चित्र में शिलादर्शित होठ की आकृति के आसपास शैलांकन है जो उपरोक्त वर्णित ध्वंस के बहुत पूर्व किसी काल में यहाँ भीमबैठिका के आवासियों की शैली के रंगों के उपयोग की जानकारी रखने वाले आदिमानव की बसाहट दर्शाते हैं। भिन्नता मात्र इतनी है कि यह शैलाश्रय ज्वालामुखी की छुटपुट लावा फिंकान से निर्मित प्रतीत होता है भीमबैठिका की तरह समुद्र से उभरा नहीं है। यहाँ के चित्रांकन में इसीलिए

कुएँ, नदी, पशुपालन और जीवन की अहिंसक शैली और साधना स्थली दिखती है। उदर पूर्ति के लिए आखेट का सहारा नहीं लिया दीखता। हाँ किसी काल में यहाँ मानव की बसाहट दर्शाते हैं। सामान्य तौर पर यहाँ सारे अहिंसक चित्र ही दिखाई देते हैं। स्थिति के अनुसार इन्हें पाँच भागों में बाँटा जा सकता है।

1. **प्रथम अंकन** – पालतू पशु, गाय, भैंस खेती आवास आदि चित्र ठोड़ी के बाऐं नीचे बने लाल रंग के भिज़ि चित्र सिंधु घाटी के प्रतीकों वाला है, जिन्हें बनाने से पहले सफेद रंग का हल्का सा लेपन किया गया और फिर कुछ लेखन अंगुलियों से और कुछ बरूं से लिखा गया लाल रंग में दिखाई देता है। इनमें एक पशु शांत खड़ा दिखता है अर्थात् आखेट नहीं वह एक पालतू पशु है। रंगों का उपयोग इसे भीमबैठिका युग के समकक्ष ले जाता है। इनमें कई सिंधु घाटी लिपि के अंकन पाषाण पर उकेरित है। पाषाण की सतह कठोर है और उस पर अंकन आदिम युगीन, सिंधु घाटी सज़्यता युगीन और कुछ संभवतः ब्राह्मी में बाद का भी किया हुआ दिखता है ।

2. **दूसरा अंकन** – छत्रशिला के दाहिने किनारे काल्पनिक एक होंठ के जैसी आकृति के दाहिने कोने के ही नीचे की स्थिति पर दिखता है जो किसी समीपस्थ नदी अथवा नाले के बहाव का होना दर्शाता है साथ ही यही एक कुआँ अथवा बावड़ी है और ढलाने दर्शाता एक विशेष पर्वत भी है। यह लेखन कई बार किया हुआ थोड़ा-थोड़ा हटकर किया हुआ दीखता है। जे. एम. केनोअर वाला वूज़्ब स्केच भी यहाँ दिखलाई देता है इसमें होंठ का सा आकार बनाती शिला के ही क्षेत्र में वूज़्ब स्केच, नदी, बावड़ी, पर्वत आदि किसी विषेश प्रयोजन से अंकित किए होने चाहिए। बावड़ी और टीले के बीच में भी कुछ अंकित है जो अभी समझ में नहीं आ रहा है। इन शैलचित्रों को किसी एक काल का है, नहीं कहा जा सकता है। इसे भी सफेद लेपन के ऊपर लाल रंग से माँड़ा गया है। गौपालकों ने इसे खूब खरौंचा है अतएव कुछ छूट सा गया है किंतु फिर भी ऐच्छित चीजें दर्शाने में चित्रकार सफल है संभव है कि सैंधव अंकनों को बनाने से पूर्व के आवासीय अंकन हों किंतु आखेट किसी काल में नहीं दीखता। नेत्र का आभास देते हुए भिन्न-भिन्न अंकन भी हैं जो कदाचित आवासी को जागते रहने के लिए सावधान करते हैं।नेत्र भी कई बार में बने दिखलाई देते हैं जो कदाचित आसपास की बसाहट को दर्शाते हैं।

3. तीसरा खुदे हुए चित्रांकन – इसी से कुछ हटकर वहीं आगे छाई छत पर इस प्रकार का है कि उसमें सफेद रंग का भी उपयोग नहीं हुआ है। मात्र खुदे हुए अंकित कुछ घेरे है जो बावड़ी का सा अंदाज देते हैं अथवा कदाचित लावा फूटने के बाद का प्रथम अंकन दर्शाते हों, निश्चित कुछ कहा नहीं जा सकता। उनका अंकन प्राचीन होना संभव है जब ज्वालामुखी को कदाचित दैवी प्रकोप समझा जाता रहा हो।

4. चौथा अंकन आँखें – इन्हीं से कुछ हटकर चौथा अंकन यहाँ प्रदर्शित है जिसमें अनेक आंखें बनी हैं। कदाचित इसे 'टोरिया के चितेरे इसीलिए पुकारा जाता रहा है। इसमें एक अंकन सिंधु घाटी के अंकन से केवली के लोकपूरण से बहुत मिलती हुई चकरी है जो एकबार पाषाण पर नीरंग दिखती है और दो जगह रंगीन चकरी के रूप में भी ऐसा प्रतीत होता है कि पाषाणीय अंकन पूर्व का है और रंगों के उपयोग वाला बाद का। आदिमानव का कोई परिवार भीमबैठिका से भटककर कदाचित अलग छूटकर कुछ काल के लिए यहाँ बस गया हो ऐसी संभावना को रंगों और शैली को देखकर बनती है।

5. पाँचवा अंकन– चकरी का अंकन है जो नेत्र के अंकन से मेल खाता सा लगता है किंतु उससे हटकर भिन्न है। सैंधव संकेतों में इसे केवली का लोकपूरन कहा गया है। कदाचित उसे ही चितेरा भी कहा गया है। चित अर्थात् आत्मा को देखने वाला आत्मा । अर्थात् यहाँ कभी किसी केवली के साथ कई आत्मसाधकों ने आश्रय पाया होगा। सैंधव संकेत का दर्शन भी यहाँ देखने को मिला है। उसी काल में यहाँ खेती और आवास बनाना भी प्रारंभ किया होगा ऐसा संकेत भी इन शैलचित्रों से मिलता है। किंतु इसके अंदर मानव ने पशुपालन का विकास भी दर्शाया है। एक वूज़्ब स्केच भी दिखता है जो कि सैंधव संकेत है जो उसके उच्चतम आध्यात्म की उद्घोषणा करते हैं। बसाहट के चित्रांकन कारण ये शैलचित्र विकासमय मानव का भी यहाँ बसना दर्शाते हैं। जिस हेतु छप्पर अंकनमय दिखला है। दो जगह सप्त पंखुड़ी पुष्प भी दिखता है। किंतु इन शैलांकनों में कोई मानव अंकित नहीं है। कोई कायोत्सर्गी भी नहीं दिखता। सिंधुघाटी के मछली और स्वस्तिक भी नहीं दिखते।

यहाँ से लगभग तीन किलोमीटर की दूरी पर महावीर युग के बाद कब जिनधर्मी आकर यहाँ बस गए इसका संकेत नहीं मिलता फिर भी ग्यारहवीं शती की प्रशारित

वाले खंडित जिनबिंबों का अंबार देखकर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि यहाँ एक विशाल जिनधर्मी बसाहट रही जिसने कई विशाल जिन मंदिरों का निर्माण कराया होगा और बिंब पधराए होंगे। जिस भी आततायी, धर्म और कला विरोधी ने यहाँ उत्पात मचाया उसने ना केवल जिन मंदिरों को बल्कि यहाँ समीप स्थित दो सूर्यमंदिरों को भी बेरहमी से नष्ट किया कि जिस ओर देखो उस और यहाँ टीले ही टीले दिखाई देते हैं। ऐसा लगता है कि कालांतर में खंडहरों पर टीले बन गए हैं। मात्र एक टीले की खुदाई ने ही खंडित जिनबिबों का अंबार दिखला दिया है।

मात्र 8-9 जिन बिंब ही अखंडित मिले हैं। इनमें से अतिविशेष अतिशयकारी खड़गासित अरहनाथ और पद्मासित अन्य चार पाँच बिंब, सभी अति मनोज्ञ हैं जो अब नवनिर्मित जिन मंदिर में स्थापित हैं। आसपास के क्षेत्रों में खंडित सूर्यमंदिर हिले हुए अब भी खड़े हैं। लगता है कि इन सब का विध्वंस हुआ था किंतु उसे सुधारनें की चेष्टा की गई जिसमें खंभे खंडित जिनमंदिरों के उपयोग कर लिए गए। किंतु बाद में एक पर आसमान से बिजली गिर गई। इसमें एक शिलालेख अपठ उड़िया ब्राह्मी में मिला है । ग्यारसपुर के खंडित जिन मंदिर की तरह यह अब भी अपनी कला दिखलाता अधूरा खड़ा है। नव निर्मित जिन मंदिर के समीप ही एक टीला है जो कदाचित वहाँ की प्राचीन बस्ती को दबाए हो। उसी के पीछे कुछ बड़े-बड़े बोल्डर हैं जिन पर एक पुरुष बिंब रखा है। उसे वहाँ के ग्रामीण आज भी पूजते हैं। खिचीं, तनी मूछों वाला रोबीला, शासक जो जिन भक्त था। लगता है कि माल्यधर बना वह जिन द्वार पर द्वारपाल बना खड़ा है । वो मजबूर जिनभक्त, विधर्मी आक्रमकों से जूझकर भी संभवतः हार गया और मंदिरों के साथ-साथ अपने राज्य को विनाश से बचा न सका । सूर्यमंदिर का यह शिलालेख कदाचित् कुछ और भी बतला सके।